जिस आदमी ने छाया बेची

कोरिया की लोककथा

जिस आदमी ने छाया बेची

कोरिया की लोककथा

कई वर्ष पहले, भीषण गर्मी के एक दिन एक युवक खेत के किनारे काम कर रहा था. आकाश में सूरज आग उगल रहा था. आदमी के चेहरे से पसीने की बूँदें टपक रही थीं.

वह एक बाड़ ठीक करने का प्रयास कर रहा था. उसने गरदन से पसीना पोंछा. उसने थोड़ा पानी पीया. लेकिन तब भी उसका गला सूख रहा था. उसके लिए काम करना कठिन हो गया.

गर्मी बहुत ज़्यादा थी.

उसने खेत के दूसरी ओर देखा. उसे एक पेड़ दिखाई दिया. पेड़ की विशाल डालें और हरे पत्ते गर्म हवा में झूल रहे थे.

“अहा!” वह बोला. “छाया!”

पेड़ एक बहुत बड़े घर के फाटक के बाहर लगा हुआ था. वह आदमी धीरे-धीरे चलता हुआ उस पेड़ के निकट आ गया. वह उसके पत्तों की ठंडी छाया में बैठ गया.

शीघ्र ही वह आदमी सो गया. उसने सपना देखा. सपने में उसने, सर्दी के दिन में, पत्थर के फव्वारे में ठंडा पानी देखा.

“अच्छा है!” नींद में वह बोला.

“बिलकुल अच्छा नहीं है!” उसने किसी को कहते सुना.

आदमी चौंक पड़ा. वह सीधा बैठ गया. “यह किसने कहा?” उसने पूछा.

फिर उसने दूसरी तरफ पेड़ के नीचे एक आदमी को बैठे देखा. वह आदमी रेशम के नरम तकियों पर बैठा आराम कर रहा था. उसने बढ़िया वस्त्र पहन रखे थे. वह बहुत धनी दिखाई दे रहा था.

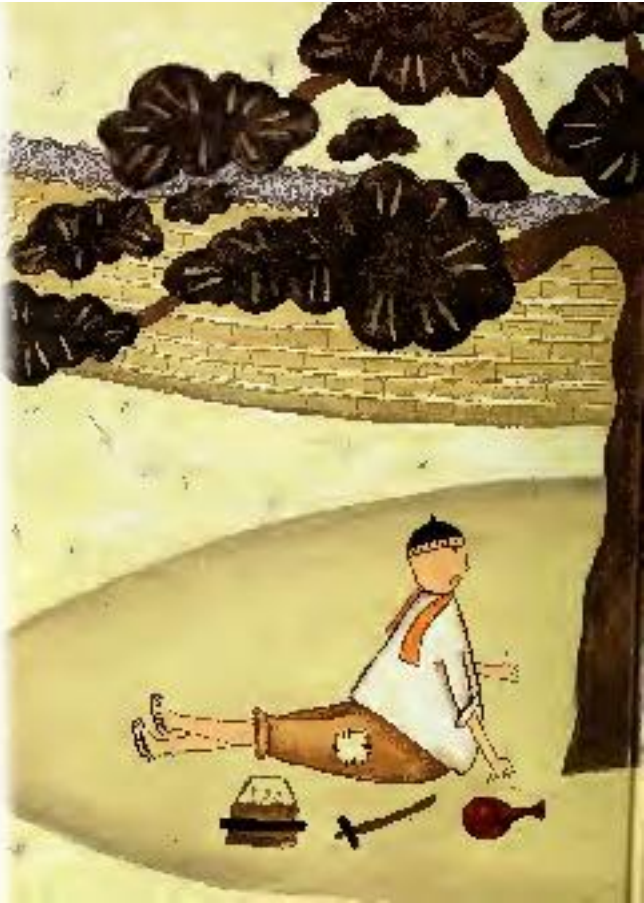

"मैंने कहा," उस आदमी ने उत्तर दिया.

"तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई! मैं शर्त लगा सकता हूँ कि तुम चोरी-छिपे आकर मेरी छाया में बैठ गए!"

"तुम्हारी छाया?" युवक ने पूछा.

"हाँ, मेरी छाया," धनी आदमी ने कहा. "मेरे दादा के दादा ने यह पेड़ लगाया था. अब यह पेड़ मेरा है. इसलिए इसकी छाया भी मेरी है."

“लेकिन यह पेड़ तो हम सब का है,” युवक बहस करने लगा.

“नहीं!” दूसरे आदमी ने कहा.

“यह पेड़ मेरा है, सिर्फ मेरा.”

तब युवक ने एक बात युक्ति सोची.

“तो, आप इस पेड़ की छाया के स्वामी हैं?” उसने पूछा.

“हाँ,” धनी आदमी ने कहा.

“क्या यह छाया आप मुझे बेचेंगे?” युवक ने पूछा.

धनी आदमी हँसने लगा. यह कितना मूर्ख है! उसने सोचा. वह सोचता है कि पेड़ की छाया खरीद सकता है.

वह युवक की ओर घूमा.

“अवश्य,” उसने कहा. “मुझे सोने के सिर्फ तीन सिक्के दे दो और यह निर्मल, स्फूर्तिदायक छाया तुम्हारी हो गई.”

“मुझे स्वीकार है!” युवक ने कहा. उसने अपनी जेब में हाथ डाला और सोने के तीन सिक्के निकाल कर दे दिये.

धनी आदमी हँसता हुआ वहाँ से चला गया.

जैसे दिन बीता, पेड़ की छाया लंबी होती गई. वह घास के ऊपर होती हुई पगडण्डी तक आ गई. शीघ्र ही छाया बड़े फाटक को पार कर, बड़े घर के अहाते तक आ गई. युवक छाया के साथ-साथ आगे बढ़ता गया. फिर वह धनी आदमी के घर के अहाते में आकर लेट गया.

गुस्से से भरा धनी आदमी घर के बाहर आया.

“मेरे अहाते से बाहर निकल जाओ,” वह चिल्लाया. “यहाँ क्या कर रहे हो?”

“मैं तो बस अपनी छाया में लेटा हूँ,” युवक ने कहा.

धनी आदमी भुनभुनाया. उसने आँखें तरेर कर युवक को देखा. फिर घूम कर वह वापस घर के भीतर चला गया.

बाद में पेड़ की छाया सिरकती हुई धनी आदमी के घर के बरामदे में आ गई. युवक भी वहाँ आ गया. फिर छाया खिड़कियों से निकलती हुई बड़े घर के अंदर आ गई. युवक ने दरवाज़ा खोला और घर के भीतर आ गया.

"बाहर निकलो!" धनी आदमी चीखा. "यह मेरा घर है!"

"और यह मेरी छाया है," युवक ने शांतिपूर्वक कहा.

"मैं सोने के तीन सिक्के तुम्हें लौटा दूँगा," धनी ने सुझाव दिया.

"नहीं, धन्यवाद," युवक ने उत्तर दिया.

"**मैं तुम्हें दस सिक्के दूँगा**," धनी आदमी चिल्लाया.

"नहीं, धन्यवाद," युवक ने विन्रमता से कहा.

जैसे ही सूर्यास्त हुआ छाया लुप्त हो गई. तब युवक अपने घर लौट गया. लेकिन अगले दिन भी सूरज चमक रहा था. इस बार युवक अपने कुछ मित्र साथ ले आया. वह सब धनी आदमी के बरामदे में बैठ गए. वह आपस में बातें करने लगे और हँसने लगे.

धनी आदमी यह सब और सहन नहीं कर सकता था. सोने के सिक्कों से भरी एक बड़ी थैली लेकर वह बाहर की ओर भागा.

“कृपया,” उसने प्रार्थना की. “मैं अपनी छाया वापस खरीदना चाहता हूँ. मैं तुम्हें बीस सोने के सिक्के दूँगा.”

“नहीं, धन्यवाद,” युवक ने कहा.

“पचास!” धनी आदमी ने कहा

“नहीं, धन्यवाद,” युवक ने फिर कहा.

धनी आदमी ने गहरी साँस ली. “**तो ठीक है**,” वह चिल्लाया. “**एक सौ सोने के सिक्के ले लो**!”

युवक ने सिक्के ले लिए. वह और उसके मित्र वहाँ से चले गए और फिर कभी लौट कर वहाँ नहीं आए.

उन पैसों से युवक ने अपने लिए एक घर खरीदा. उस घर के पास दो विशाल पेड़ थे. उसके घर का बरामदा सदा छाया में और ठंडा रहता था. युवक अकसर अपने मित्रों के साथ वहाँ बैठता था....और उस दिन की बात करता था जिस दिन उसने सोने के सौ सिक्कों में पेड़ की छाया बेची थी.

अंत